॥ पृष्ठ 187-194

उ प संहा र

* * *

उ प सं हा र

× ×

"भगवतीचरण वर्मा के "भूले बिसरे चित्र' उपन्यास का अनुशीलन" इस लघु शोध - प्रबंध का संक्षिप्त लेखा - जोखा तथा इसमें प्राप्त उपलब्धियों का जिक्र इसमें किया गया है ।

प्रथम अध्याय में भगवती बाबू के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अंतर्गत साहित्यकार के नाते उनकी महानता का परिचय देते हुए उनका जीवन वृत्त लिखते समय जन्म, माता-पिता, बचपन, विवाह, जीविकोपार्जन के लिए उन्हें किन - किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा तथा उनकी मृत्यु किस प्रकार और कब हुई आदि के बारे में समग्र विवेचन किया गया है । उनके व्यक्तित्व का वर्णन करते समय उनका रंगरूप, पोशाक, स्वभाव, नियतिवादी दृष्टिकोण आदि बातों को स्पष्ट करते हुए उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को दिखाया है । कृतित्व में साहित्य सृजन का आरम्भ और उनकी विभिन्न साहित्यिक कृतियों की चर्चा की है । उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के बाद निष्कर्ष रूप में निम्नलिखित उपलब्धियाँ दिखाई देती हैं ।

भगवती बाबू का बचपन बहुतही अभावग्रस्त स्थिति में बीता । छोटी उम्र में ही उन्हें घर की जिम्मेदारियों का बोझ ढोना पड़ा । आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं का सामना हिम्मत के साथ करते हुए अपने कर्तव्य - पथ पर आगे बढ़ते रहे और उँची शिक्षा भी प्राप्त कर ली । परिवार को सँभालने के लिए उन्हें अपनी इच्छा के विरुद्ध छोटी - मोटी नौकरियाँ करनी पड़ी । मूलतः स्वाभिमानी होने के कारण वे एक स्थान पर अधिक दिनों तक नौकरी नहीं कर सके । बेईमानी और धोखाधड़ी से उन्हें सख्त नफरत थी, जिसके कारण वे वकालत में नाकामयाब रहे । उनके नौकरियों के अधिकतर क्षेत्र साहित्य से सम्बन्धित रहे । कवि प्रतिभा उनमें बचपन से ही थी । अतः वे सर्वप्रथम एक कवि के रूप में विख्यात हुए । बाद में गणेशंकर विद्यार्थी की प्रेरणा से वे गद्य-साहित्य क्षेत्र में आ गये । उन्हों ने कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, एकांकी, संस्मण आदि विधाओं में साहित्य सृजन करके अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया । अपने जीवन के अन्तिम बीससाल उन्हों ने सिर्फ साहित्य - साधना में बिताकर अनेक मौलिक कृतियों को जन्म दिया । साहित्य क्षेत्र में उपन्यासकार के नाते उनका स्थान अग्रणी है । इस महान साहित्यकार को भारत सरकार ने 'पद्म-भूषण' खिताब देकर उनका गौरव किया । संक्षेप में हम

उनके बारे में इतनाही कह सकते हैं कि वे हिन्दी उपन्यास जगत के प्रमुख आधार स्तंभ हैं । उनकी प्रदीर्घ जीवन यात्रा एक संघर्ष की कहानी बनकर रह गयी है ।

द्वितीय अध्याय में 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास की संक्षिप्त कथावस्तु देते हुए उसकी स्वाभाविकता, रोचकता, सम्बध्दता, प्रवाहमयता, सजीवतादि विशेषताओं की चर्चा की हैं । साथ ही उपन्यास का आरम्भ, मध्य कथानक विकास और अन्त का विस्तृत विवेचन किया गया है । 'भूले बिसरे चित्र' में परिवर्तनशील मान्यताओं के साथ एक परिवार के परंपरागत चार पीढ़ियों की कथा को एक सूत्र में बाँधने में भगवती बाबू सफल हुए हैं । सम्पूर्ण उपन्यास विश्रृंखलित जीवन मूल्यों और कथानक के नये मोड़ो के आधार पर पाँच छोटे बड़े खण्डों मे विभाजित किया गया हैं । कथानक का आरम्भ, मध्य और अन्त रोचक, कौतूहलवर्धक, स्वाभाविक और प्रभाव-शाली है । अतः कथानक का विकास आद्योपान्त सरल, स्वाभाविक गति से विकसित हुआ है । उसकी एक घटना दूसरी घटना की ओर स्वतः निसृत हो गई है । कथानक की रोचकता 'भूले बिसरे चित्र' का प्राण है ।

सम्पूर्ण उपन्यास यथार्थ धरातल पर प्रस्तुत किया गया है । लगभग सभी घटनाएँ और प्रसंग सजीव तथा विश्वसनीयता से भरपूर, रोचक और मार्मिक हैं । इसके कारण उपन्यास में गांभीर्य और गरिमा का समावेश हो गया है । जहाँ तक असम्बध्द तथा अनावश्यक कथा-विस्तार का प्रश्न है, 'भूले बिसरे चित्र' में वह नहीं के बराबर है । कथानक की रोचकता में मार्मिक प्रसंगों की उद्‌भावना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं । उपन्यास में मर्मिक प्रसंग आद्योपान्त भरे पड़े हैं भगवती बाबू ने एक कायस्थ परिवार को केन्द्र में रखकर युग सत्य और युग जीवन को जिस कलात्मकता से सँजोया है वह शिल्प विधान की दृष्टि से परिष्कृत नमूना है ।

समग्रतः मानव जीवन की असाधारण व्याख्या लिए हुए 'भूले बिसरे चित्र' का कथानक एक विशिष्ट गरिमा से मंडित महाकाव्य के समकक्ष है । पाठक उसमें इस तरह खो जाता है कि उसे सब कुछ परिचित तथा अपने और अपने निकटतम पर गुजरता हुआ प्रतीत होता है । उसके सहज, स्वाभाविक प्रवाह में अनेक प्रासंगिक कथाएँ सागर लहरों की तरह उठती और उसी में विलीन होती हुई कथानक को आगे बढ़ाती चलती हैं । कथानक को यथार्थ धरातल पर प्रस्तुत करने के साथ - साथ उसे चुस्त और पुष्ट बनाने का भरसक प्रयास हुआ है । अतः 'भूले बिसरे चित्र' मात्र एक कायस्थ परिवार की कथा नहीं है अपितु समस्त भारत वर्ष की पचास वर्षों की दास्तान है ।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत उपन्यास में चरित्र - चित्रण का स्थान निर्धारित करते हुए 'भूले बिसरे चित्र' के पात्र एवं चरित्र चित्रण का सम्पूर्ण विवेचन प्रस्तुत किया गया है ।

चरित्र - चित्रण उपन्यास का प्राण तत्व है । चरित्र - चित्रण के बिना उपन्यास का निर्माण नहीं हो सकता । 'भूले बिसरे चित्र' में परिवर्तनशील भारतीय जीवन को समग्रता से चित्रित करने के लिए लेखक को अनगिनत सजीव मानव चरित्रों की अभिव्यक्ति करनी पड़ी है । उपन्यास के लगभग सभी पात्र प्रतिनिधी चरित्र हैं । इसमें लेखक पात्रों का परिचय अन्य पात्रों के जरिये न देकर अधिकतर पात्रों का परिचय खुद अपनी ओर से देते हैं । उपन्यास के प्रमुख पात्रों में मुंशी शिवलाल, ज्वालाप्रसाद, गंगाप्रसाद नवलकिशोर तथा विद्या आदि का समावेश है तो गौण पात्रों में लक्ष्मीचन्द, प्रभुदयाल, ज्ञानप्रकाश, सत्यव्रत, प्रेमशंकर, मीर सखावत हुसेन आदि पुरूष पात्र, तो जैदेई, यमुना, छिनकी, संतो, मलका, उषा आदि स्त्री-पात्र आते हैं ।

उपन्यास में तीनों वर्गों का चरित्र-चित्रण प्रभावशाली रूप में हुआ है । उच्च वर्ग के अंतर्गत आनेवाले पात्रों में जमींदार, महाजन, पूँजीपति, व्यापारी आदि, मध्यमवर्ग के अन्तर्गत सरकारी नौकर, वकील, दलाल तथा देशभक्त आदि तो पहलवान, पुजारी और पारिवारिक सेवक निम्न वर्ग में आते हैं ।

मुंशी शिवलाल उपन्यास में प्रथम पीढ़ी तथा प्रथम चरित्र के रूप में आते हैं । संयुक्त परिवार प्रथा में विश्वास रखने वाले मुंशी शिवलाल परंपरावादी, अनैतिक, बेईमान और स्वार्थी प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं । वे सामन्तीय परम्परा का प्रतिनिधित्व करते हैं । ज्वालाप्रसाद उपन्यास में दूसरे पीढ़ी के रूप में आता हैं । वह उपन्यास का केन्द्रबिन्दु है । उसका चरित्र उदात्त एवं गरिमामय है । उसके चरित्र में चारित्रिक उदारता है । उसमें महाकाव्यात्मक नायकत्व की-सी गरिमा का अभाव होते हुए भी वह 'भूले बिसरे चित्र' का सजीव, समर्थ एवं निष्ठावान नायक है । ज्वालाप्रसाद पूँजीवादी परम्परा एवं नौकरशाही परम्पराके मिलन बिन्दु पर खड़ा है । गंगाप्रसाद उपन्यास में तीसरी पीढ़ी का नायक है । उसका चरित्र कमजोर, दिशाहीन तथा निरंकुश है । उसमें अनेक खानदानी और वैयक्तिक बुराइयाँ हैं । इसके बावजूद भी वह स्वाभिमानी है । इस उपन्यास में वह नौकरशाही परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है । नवलकिशोर उपन्यास में चौथे पीढ़ी के रूप में आता है । उसका चरित्र गंगाजल की तरह पवित्र होने के कारण अनुकरणीय है नवल स्वाभिमानी तथा देशभक्त नवयुवक है । नवल के माध्यम से लेखक ने परंपरागत विकृत मान्यताओं पर अंकुश लगाने का सफल प्रयास किया है । नवल का सम्पूर्ण चरित्र आदर्श की कसौटी पर कसा गया है । निःसन्देह नवल का चरित्र उदात्त एवं गरिमामय है । नवल राष्ट्रीय

नव चेतना का प्रतिनिधि पात्र है । नवल की बहन विद्या भी स्वाभिमानी तथा क्रान्तिकारी नव युवती है । विद्या का चरित्र नारी मुक्ति तथा स्वतंत्रता की दिशा में एक नया चरण है ।

उपन्यास के गौण पात्रों में लक्ष्मीचन्द शोषक पूँजीपति का, ज्ञानप्रकाश राजनीतिक चेतना का, प्रभुदयाल टूटती सामन्तीय परम्परा का, प्रेमशंकर मार्क्सवाद का तो भीखू आदर्श सेवक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है । स्त्री-पात्रों में जैदेई उच्च वर्गीय विधवा नारियों का, यमुना आदर्श भारतीय नारी का, संतो उच्च वर्गीय कामग्रस्त तथा विलासी नारियों का, मलका उपेक्षित वेश्याओं का तो छिनकी निम्न वर्गीय ग्रामीण स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है ।

संक्षेप में इस उपन्यास के अनेक, छोटे-बड़े पात्र मिलकर विगत पचास वर्षों के भूले बिसरे चित्रों को यथार्थ धरातल पर समग्रता से रूपायित करने में समर्थ हैं । उपन्यास के कई चरित्र अविस्मरणीय तथा वर्गगत प्रतिनिधि चरित्र हैं । भीखू, छिनकी, सत्यव्रत, ज्ञानप्रकाश, लक्ष्मीचन्द आदि पात्र सपाट एवं एक रेखीय हैं तो अन्य चरित्रों में गहराई, वर्तुलता तथा आन्तरिकता पर्याप्त मात्रा में है । उपन्यास के सभी चरित्र मानव जीवन से सम्बन्धित सजीव तथा यथार्थ चरित्र हैं । उपन्यास में पुरूष पात्रों की तुलना में स्त्री पात्र अत्यंत कम होते हुए भी जीवंत तथा मार्मिक बन पड़े हैं । अतः चरित्र चित्रण की दृष्टि से 'भूले बिसरे चित्र' भगवती बाबू की अत्यंत सफल कृति है ।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत सर्वप्रथम उपन्यास में कथोपकथन का स्वरूप तथा महत्व करते हुए उसका उद्देश्य और उसकी विशेषताओं का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया गया है । तत्पश्चात 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास में प्रयुक्त कथोपकथनों की चर्चा की है ।

'भूले बिसरे चित्र' के नियोजित कथोपकथनों में उसकी शिल्पगत लगभग सभी विशेषताएँ तथा गुण परिलक्षित होते हैं । उपन्यास के प्रत्येक खण्ड का आरम्भ और अन्त स्वाभाविक, सार्थक तथा रोचक संवादों के द्वारा प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है । उपन्यास का आरम्भिक कथोपकथन कथाविकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है । समग्रतः 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास के कथोपकथन न केवल चरित्रोद्घाटन में सहायक सिध्द हुए हैं अपितु देश काल के विलुप्त कड़ियों को जोड़ने में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं । भगवती बाबू ने विभिन्न पात्रों का चरित्रांकन उनके विविधतापूर्ण, सुन्दर तथा स्वाभाविक कथोपकथनों द्वारा किया है और उन्हें इसमें सफलता भी मिली है । सभी पात्रों के संवाद स्वाभाविक, सुन्दर, रोचक तथा मार्मिक बन पड़े हैं । इसके बावजूद भी विवेच्य उपन्यास कथोपकथन की दृष्टि से पूर्णतः निर्दोष

नहीं रहा हैं । इसमें संक्षिप्त कथोपकथन दुर्लभ हो गये हैं । उसी प्रकार लम्बे-लम्बे वाद-विवाद मूलक तथा तर्क-वितर्कपूर्ण कथोपकथन उपन्यास में खटकते हैं । गंगाप्रसाद, ज्ञानप्रकाश, फरहतुल्ला, रिपुदमनसिंह, संतो, मलका आदि पात्रों के संवाद अपेक्षाकृत अधिक लम्बे होने के कारण प्रायः अस्वाभाविक प्रतीत होते हैं । फिर भी ये संवाद मार्मिक और रोचक हैं । इस प्रकार उपन्यास के कथोपकथकन - योजन में कुछ न्यूनताएँ परिलक्षित होते हुए भी शिल्प की दृष्टि से यह सफल कृति है । इसकी कथोपकथन योजना स्वाभाविक, सरस, पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल है । अतः कथोपकथन की दृष्टि से 'भूले बिसरे चित्र' भगवती बाबू की प्रौढतम कृति सिध्द होती है ।

पंचम अध्याय में उपन्यासों में देश-काल - वातावरण का स्थान निर्धारित करते हुए 'भूले बिसरे चित्र' में जिस देश-काल-वातावरण का चित्रण हुआ है, उसका स्पष्टीकरण किया गया है ।

उपन्यास की कथा उत्तर प्रदेश के ग्राम तथा नगर जीवन से सम्बन्धित है फिर भी इसमें राष्ट्रीय चेतना के सम्मिश्रण से यह पूरे भारत - वर्ष की जीवन गाथा है । उपन्यास का कालखंड 4 जुलाई सन 1885 से सन् 1930 - 31 तक का है । इसमें एक मध्यवर्गीय कायस्थ परिवार की चार पीढियों की कथा के सहारे तत्कालीन भारतीय जीवन का सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सास्कृतिक परिदृश्य यथार्थ धरातल पर रूपायित हुआ है । स्थानगत तथा प्राकृतिक वातावरण से भी उपन्यास में शिल्पगत वृध्दि हुई है ।

उपन्यास में युग की परिवर्तनशील मान्यताओं का जीवंत तथा यथार्थ चित्रण हुआ है । इसमें ग्राम्य जीवन तथा नगर जीवन से सम्बन्धित ईर्ष्या - द्वेष, लड़ाई - झगड़े, बात - चीत, खान - पान, वेश - भूषा, पारिवारिक विघटन, धार्मिक आड़म्बर आदि यथार्थ तथ्यों को लेखक ने प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है । उसके साथ - साथ सामन्ती जीवन के टूटने, पूँजीवाद तथा मध्यवर्ग के उदय का क्रमिक तथा स्वाभाविक चित्रण हुआ है । अंग्रेजी शासन व्यवस्था, दिल्ली दरबार, कांग्रेस के विभिन्न आन्दोलन, 'मुस्लिम लीग' की स्थापना, हिन्दू-मुस्लिम दंगे, असहयोग आन्दोलन, सामूहिक सत्यागह आन्दोलन आदि घटनाओं के उल्लेख से तत्कालीन राजनीतिक तथा धार्मिक वातावरण का यथार्थ चित्रांकन हुआ है । उपन्यास में युगीन सामाजिक विकृतियों का चित्रण देश कालानुरूप हुआ है । संक्षेप में हम कहेंगे कि, 'भूले बिसरे चित्र' में देशकालानुरूप वातावरण - योजना उपन्यास की मूल आत्मा से इतनी तदाकार हो गई है कि उपन्यास को पढ़ते हुए हम उसकी स्वाभाविकता, सजीवता, विश्वसनीयता, यथार्थता आदि अनुभव करके लेखक की गहन अन्तर्दृष्टि के प्रति विस्मय विमुग्ध हो उठते हैं । अतः उपन्यास में अतीत के भूले बिसरे चित्र लगभग साकार

हो उठे हैं ।

षष्ठ अध्याय में उपन्यास में भाषा-शैली का महत्व बताते हुए 'भूले बिसरे चित्र' में प्रयुक्त भाषा-शैली का विवेचन किया गया है ।

शब्दावली की दृष्टि से उपन्यास की भाषा तीन प्रकार की है- (1) ग्रामीण पात्रों की भाषा तद्भव और देशज शब्दों की जन भाषा है जिसमें उर्दू फारसी के प्रचलित शब्दों का आधिक्य है । (2) नागरी पात्रों की भाषा में तत्सम् और तद्भव शब्दावली का प्रायः समतुल्य प्रयोग मिलता है । इसमें देशी-विदेशी के आम प्रचलित शब्दों का प्रयोग विपुल मात्रा में हुआ है । (3) तीसरे प्रकार की भाषा अदालती कारोबार की है, जिसमें अरबी-फारसी के तत्सम और तद्भव शब्दों का ही आधिक्य है ।

उपन्यास में ग्रामीण पात्रों से सम्बन्धित छिनकी, घसीटे आदि की भाषा स्वाभाविक लोक भाषा है तो मीर सखावत हुसेन, अलीरजा जैसे मुस्लिम पात्रों की भाषा शुध्द उर्दू मिश्रित है । गंगाप्रसाद, नवल, ज्ञानप्रकाश, रिपुदमनसिंह आदि शिक्षित शहरी पात्रों की भाषा परिष्कृत या बोलचाल की भाषा है ।

इस प्रकार सरस भाषा शैली के योगदान से 'भूले बिसरे चित्र' की रोचकता, प्रवाह और स्वाभाविकता में कलात्मक वृध्दि हुई है । उपन्यास की भाषा उर्दू-फारसी युक्त उत्तर प्रदेश की आम बोलचाल की भाषा है, जो माधुर्य गुणों से युक्त, सरल, सुबोध एवं मार्मिक भावों की अभिव्यक्ति में सक्षम है । सजीवता, सरसता, सुन्दरता, भावानुरुपता, प्रसंगानुकूलता, पात्रानुकूलता, लाक्षणिक और व्यंग्यात्मक उक्तियों से समृध्द मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों और समानार्थी शब्द-युग्म आदि के सहज स्वाभाविक प्रयोग से 'भूले बिसरे चित्र' की भाषा में सप्राणता, सहज बोधगम्यता, चित्रात्मकता तथा प्रवाहमयता के गुण विपुल मात्रा में विद्यमान हैं । अतः भाषा शैली की सफल अभिव्यक्ति में भी यह उपन्यास खरा उतरता है ।

सप्तम् अध्याय में उद्देश्य तत्व का स्वरुप तथा महत्व स्पष्ट करते हुए विवेच्य उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया है ।

उपन्यास का उद्देश्य इसके शीर्षक में ही निहित है । लेखक का उद्देश्य विगत पचास वर्षों के परिवर्तनशील भारतीय-जीवन को पुनः याद के सहारे समग्रता से चित्रित करना रहा है । इस महत् उद्देश्य को साकार करने के लिए लेखक ने अनेक यथार्थ तथ्यों का उद्घाटन प्रभावशाली ढंग से किया है जिसमें लेखक की भावात्मकता, गहन अन्तर्दृष्टि तथा बौध्दिकता सराहनीय है ।

इसके अन्तर्गत जमींदारी का वातावरण, पूँजीपतियों के अत्याचार, मध्यवर्गीय नौकरशाही का उदय, सामाजिक परिवर्तन और विकृतियाँ, स्वतंत्रता आन्दोलन तथा भारतीय एकता की अनिवार्यता सजीव रुप में चित्रित की गई है । इस प्रकार युग जीवन तथा उसके बदलते जीवन मूल्यों की यथार्थ झांकी प्रस्तुत करना ही लेखक का उद्देश्य रहा है और उन्हें इसमें पूर्ण सफलता भी मिली है ।

भगवती बाबू नवल के चरित्र के माध्यम से आधुनिक युवा पीढ़ी के सामने मानवतावादी जीवन दृष्टि रखते हैं । लेखक नवल के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि, जीवन में संघर्ष महत्वपूर्ण है । विपरीत परिस्थितियों में भी निराश न होकर बराबर संघर्ष करते रहना और अपना मार्ग प्रशस्त करना ही मानव जीवन को सार्थकता प्रदान करता है । आत्मनिर्णय का क्षण ही मानव मुक्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है । उपन्यास का अन्त एक विराट चेतना और जन जागरण से होता है ; जिसमें भगवती बाबू ने अप्रत्यक्ष रुप में नवयुवकों के सामने नव भारत निर्माण करने का संदेश दिया है ।

भगवती बाबू ने आलोच्य उपन्यास में सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ युगीन परिवेश और शाश्वत प्रश्नों पर भी अपने विचार व्यक्त किए हैं । इन समस्याओं में नवीन मूल्य स्थापित करने की शक्ति पर्याप्त मात्रा में है । मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं का समाधान वर्माजी ने अपनी जीवन दृष्टि की मान्यताओं के अनुसार नवल तथा विद्या के माध्यम से प्रस्तुत किया है । इस उपन्यास में लेखक व्यक्ति, परिवार और समाज के सीमित दायरे से निकलकर राष्ट्रीय धरातल पर पहुँचा है जहाँ नवनिर्माण की लालसा और प्रगतिशलता आलोकित हो उठी है । लेखक ने मानव जीवन की सफलता, असफलता तथा परिवर्तीत जीवन मूल्यों का दायित्व भी नियति पर छोड़ दिया है और इसके मूल में परिस्थिति को दोषी ठहराया है । कुल मिलाकर 'भूले बिसरे चित्र' उद्देश्य की दृष्टि से भगवती बाबू की अत्यंत सफल कृति सिध्द होती है ।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ :

अनुसंधान के प्रारंभ में 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास के संदर्भ में जो प्रश्न मेरे सामने थे उन प्रश्नों के उत्तर निम्नलिखित हैं -

(1) क्या 'भूले बिसरे चित्र' में चित्रित भारतीय जीवन के चित्र यथार्थ तथ्यों पर आधारित हैं ?

- उपन्यास में देशकालानुरुप परिवर्तनशील सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक परिदृश्य यथार्थ पृष्ठभूमि पर समग्रता से चित्रित हुआ है । अतः 'भूले बिसरे चित्र' में चित्रित भारतीय जीवन के चित्र यथार्थ तथ्यों पर आधारित हैं ।

शीर्षक

(2) क्या उपन्यास का 'भूले बिसरे चित्र' उचित है ?

- उपन्यास में अतीत के भूले बिसरे चित्रों को पुनः याद के सहारे रेखांकित किया गया है । अतः मानव जीवन की असाधारण व्याख्या करने वाले 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास का शीर्षक उचित, सार्थक तथा सुन्दर है ।

(3) क्या नवल का चरित्र आधुनेक युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी है ?

- स्वाभिमानी नवल अपनी जिजीविषा वृत्ति के कारण अंत में देशव्यापी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेता है । इस प्रकार वह संघर्ष में भी नवनिर्माण और प्रगतिशीलता की ओर अग्रसर होता है और मानवतावादी सिध्दान्त की स्थापना करते हुए अपना जीवन सार्थक बनाता है । अतः नवल का चरित्र युवा-पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी है ।

(4) क्या नवल के चरित्र में वर्माजी का व्यक्तित्व प्रस्तुत हुआ है ?

- नवल के चरित्र में लेखक के व्यक्तित्व के अन्तर्बाहय अनेक पहलू समाविष्ट हो गये हैं अतः वर्माजी ने नवल के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है ।

(5) उपन्यास के अन्त में वर्माजी किस दृष्टिकोण की स्थापना करना चाहते है ?

- उपन्यास के अन्त में वर्माजी मानवतावादी तथा प्रगतिशील दृष्टिकोण की स्थापन करना चाहते हैं ।

(6) क्या उपन्यास में महत् उद्देश्य की पूर्ति हुई है ?

- मानव जीवन की असाधारण व्याख्या करने वाले तथा एक सम्पूर्ण परिवर्तनशील युग को समग्रता से प्रस्तुत करनेवाले 'भूले बिसरे चित्र' उपन्यास में उसके महत् उद्देश्य की सफलता से पूर्ति हुई है ।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :

प्रस्तुत उपन्यास को लेकर निम्नांकित विषयों पर इच्छुक शोधार्थी अनुसंधान कर सकते है --

(1) "भूले बिसरे चित्र' उपन्यास में युगचेतना"

(2) "भूले बिसरे चित्र" उपन्यास में प्रतिबिंबित समाज - जीवन का अनुशीलन"

(3) "भूले बिसरे चित्र' उपन्यास में महाकाव्यात्मक चेतना"

× × ×